

पलास वृक्ष पर

लाख की वैज्ञानिक खेती



भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

नामकुम, राँची - 834010, झारखण्ड

दूरभाष: 0651-2261154, फ़ैक्स: 0651-2260202

ई-मेल: iinrg@ilri.ernet.in | हमसे संपर्क करें : <http://ilri.ernet.in>



‘ढाक के तीन पात’ या ‘टेसू’ के फूल को कौन नहीं जानता। इसे ही पलास, परसा, छिउल, या खगरा और अंग्रेजी में बस्टर्ड टीक या बंगाल कीनो, बंगला में पलास, परसा या कमरकस, उड़िया में मुरका, तेलगू में मोदुगा या पालाडुलु, मलयालम में पिलाचम या मुरुक्का मरम, मुन्डारी में मुरुद, संथाली में मूरुप दारे मुरुप, कोल में मुरुद तथा वैज्ञानिक नाम व्यूटिया मोनोस्पर्मा है। इस पर लाख की खेती यानि लाख कीट पालन से वृक्षों पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।



पलास वृक्ष

रंगीनी लाख कीट से एक वर्ष में दो फसलें ली जाती हैं जिसे बैसाखी (ग्रीष्मकालीन) और कतकी (वर्षाकालीन) फसल कहते हैं। बैसाखी फसल हेतु लाख कीट या बीहन को वृक्षों पर अक्टूबर या नवम्बर माह में तथा कतकी के लिये जून या जुलाई माह में चढ़ाया जाता है। बैसाखी और कतकी फसल बीहन चढ़ाने के बाद क्रमशः 8 और 4 माह में तैयार हो जाती है।

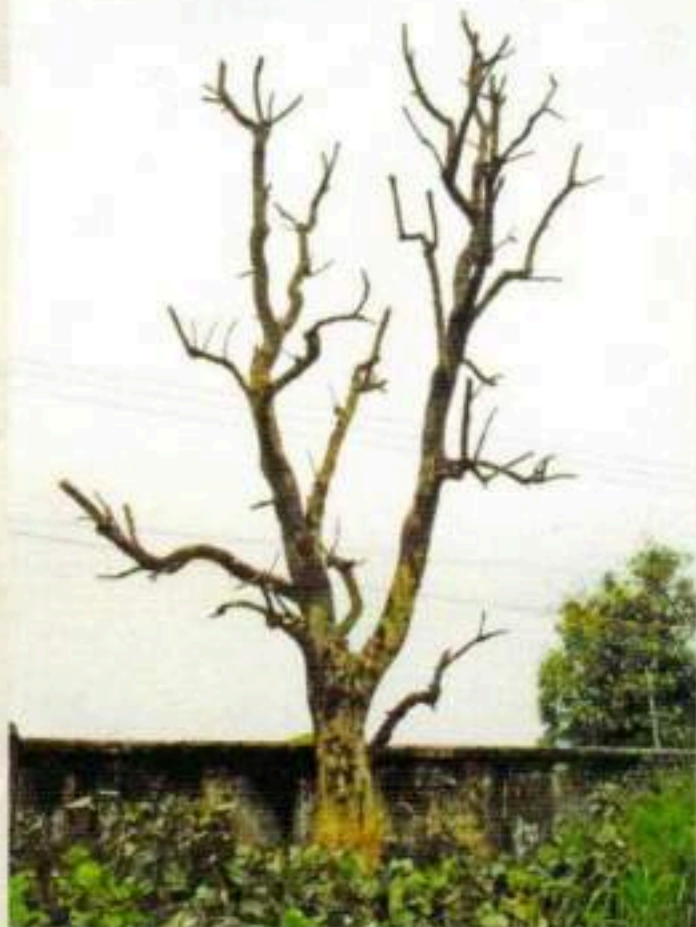
कीट पालन की सामान्य प्रक्रियायें

वृक्षों की काट-छाँट: वृक्षों पर बीहन चढ़ाने या कीड़ा छोड़ने (कीट संचारण) के पहले वृक्षों की काट-छाँट इसलिये आवश्यक है क्योंकि लाख कीट नर्म, मुलायम और रसदार टहनियों पर अच्छा पलता है।

काट-छाँट की प्रक्रिया, कीट छोड़ने के 6 माह पहले सबसे उपयुक्त है अतः बैसाखी फसल जो अक्टूबर या नवम्बर में लगायी जाती है उसकी काट-छाँट

अप्रैल माह में करना चाहिये। यदि पहले से पेड़ पर लाख नहीं हो तो यह प्रक्रिया मार्च में जब फली आना प्रारम्भ हो जाये तभी कर लेना चाहिये।

काट-छाँट हल्की करें। अंगूठे (2.5 से.मी. व्यास) से मोटी टहनियाँ न काटें। 1.25 से.मी. से 2.5 से.मी. व्यास की टहनियों को एक हाथ (एक से डेढ़ फीट) की ऊँचाई से काटें। 1.25 से.मी. व्यास से कम मोटाई की टहनियों को उनके उत्पत्ति के स्थान से काटें। सूखी, रोगग्रस्त, टूटी या फटी हुई



टहनियों को क्षतिग्रस्त स्थान से काटें, सूखे टूँठ को भी उनके उत्पत्ति स्थान से काट कर निकाल दें। काट-छाँट के लिए तेजधार वाली दावली का प्रयोग करें। टहनियाँ तिरछी, साफ और एक बार में काटें। पहली बार काट-छाँट करते समय पेड़ों को उचित स्वरूप देने हेतु थोड़ी मोटी डाल को भी काटा जा सकता है।

कीट-संचारण

पेड़ों पर कीट संचारण की प्रक्रिया कई स्थानों पर बीहन लाख की डंडियों को बाँधकर किया जाता है, जो तीन प्रकार से किया जाता है (i) पारम्परिक या कृषक विधि—एक से तीन फीट परिपक्व लाख कीट युक्त टहनी पत्ती सहित नये पेड़ों पर फंसा देते हैं (ii) वैज्ञानिक तरीके के अन्तर्गत बीहन लाख डंडियों को बण्डल बनाकर सुतली से कहीं-कहीं बाँधते हैं (iii) शत्रु कीटों से सुरक्षा हेतु 60 मेश नाईलान की जाली में भरकर पेड़ों पर बाँधते हैं।

- प्रत्येक सौ-सौ ग्राम को 60 मेश की नाइलान जाली थैले (27x12 से. मी. या सुविधानुसार नाप) में भरकर प्लास्टिक सुतली से थैली के दोनो

ओर बाँध दें तथा सुतली थोड़ी बड़ी रखें, जिससे वृक्षों की डालियों पर इसे सुतली द्वारा बाँधा जा सके।

- जाली न मिलने पर बीहन लाख की 100 ग्राम की डंडियों को प्लास्टिक सुतली से बाँधकर तब पेड़ों की डालियों पर कई स्थानों पर बाँधें।



- बंडल बाँधने के आस-पास की टहनियों पर यदि कीट भर जाये तो बण्डल खोलकर दूसरे ऐसे स्थान पर स्थानान्तरित कर दें, जहाँ की टहनियाँ खाली हों।

पलास वृक्ष की नर्म टहनियाँ

फुंकी उतारना

- लाख शिशु कीट का जैसे ही बीहन लाख से निकलना समाप्त हो जाये वैसे ही लाख लगी खाली डंडी (फुंकी) वृक्षों से उतार कर छील लें। निर्गमन के पश्चात् बची हुयी लाख डंडी ही फुंकी कहलाती है।
- छिली लाख शीघ्र से शीघ्र बेच दें अन्यथा इसमें विद्यमान शत्रु कीट तितली और वयस्क परजीवी बनकर नयी फसल पर अंडे देगें।

फसल कटाई

- परिपक्व फसल का उपयोग बीहन लाख के रूप में करना है तो फसल कटाई, शिशु कीट निकलने का समय ध्यान में रखकर करना चाहिये।



पलास के वृक्षों से लाख की कटाई

- अरी या कच्ची फसल जिसे अप्रैल में काटना है, कभी भी काट सकते हैं।
- अक्टूबर या नवम्बर में बीहन काटते समय सिर्फ पपड़ी वाली लाख डंडी काटें तथा छुटपुट दाने वाली टहनियाँ छोड़ दें, जिसमें से इसी समय शिशु कीट निकलकर खाली जगह में बैठेंगे और अप्रैल में वृक्षों की काट-छाँट करते समय अरी (कच्ची) लाख भी मिल जायेगी।
- अप्रैल में अरी खण्ड के वृक्षों से कच्ची लाख पूर्ण रूप से काटें और इसी समय मरी टहनियाँ यदि हों तो उसे भी काट दें।

दवा छिड़काव

शत्रु कीटों की रोकथाम तथा कोहरे (कुहासा) से होने वाले नुकसान से फसल को बचाने के लिये कीटनाशक/फफूंदनाशक छिड़कने की आवश्यकता पड़ सकती है। पलास पर फिप्रोनिल 5 प्रतिशत एस.सी. 0.007% का छिड़काव शत्रु कीटों की रोकथाम के लिये तथा कारबेन्डाजिम फफूंद के लिये आवश्यक है। पहला छिड़काव बीहन चढ़ाने या कीट निर्गमन के 30 दिन पर तथा दूसरा 60 दिन पर। कीट और फफूंदनाशक दवा बनाने के लिये 15 ली. पानी में लगभग 22-25 मि.ली. फिप्रोनिल तथा उसी में कारबेन्डाजिम (10 ग्राम पाउडर) मिलाकर बनायें।



पलास का बगान

खण्ड प्रणाली

पलास के कुल वृक्षों को तीन खण्ड में बाँटकर खेती कर सकते हैं। दो खण्ड से बीहन लाख तथा शेष एक का बैसाखी अरी फसल के उत्पादन हेतु उपयोग करते हैं। पहले बीहन खण्ड से प्राप्त बीहन का उपयोग दूसरे बीहन खण्ड तथा अरी खण्ड के वृक्षों को कीट संचारण हेतु उपयोग करते हैं। अतः पहले बीहन खण्ड के वृक्षों से 2, 4, 6, 8 इत्यादि वर्षों में तथा दूसरे बीहन खण्ड के वृक्षों से 3, 5, 7, 9 इत्यादि वर्षों में प्रति वर्ष अक्टूबर माह में नियमित रूप से बीहन मिलेगा जबकि अरी खण्ड के वृक्षों से प्रति वर्ष अप्रैल में कच्ची लाख मिलेगी।

संपर्क सूत्र :

प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण विभाग

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान

नामकुम, राँची - 834010

फोन: 0651-2261154

अगस्त 2014